RESEARCH PAPER | Sanskrit | Volume : 4 | Issue : 10 | October 2014 | ISSN - 2249-555X

# KARUN RAS KI PARAMPARA ME BHAWBHUTI

## d:.k jl dh ijEijk esa HkoHkwfr

KEYWORDS: vkor] vkJ;] rjax] vR;fDr] fufeRr ] iz'ufpUg ] laosnuk ] ?kuhHkwr

Dr. Devesh Kumar Mishra

Assistent Professor , Sanskrit , Uttarakhand Open University, Teen pani Bypass road , Haldwani , Nainital

**ABSTRACT** vkfn dfo okYehfd ds vuUrj d#.k jl dk lkfgR; vkj lekt dh laosnuk ds dUæ esa çfrf"Br dj nsus okys lHkor% mRrjjkepfjre~ ds jpf;rk HkoHkwfr gh gSA d:.k jl ds lUnHkZ esa mUgksaus vU; jlksa dh iHkko'khyrk dks U;wu djrs g;s d:.k jl dks gh dsoy dkO; vkj ukVd esa lkoZnfud ekuk A mudk dFku gS fd ,d d#.kjl gh ,slk jl gS tks fofHkUu jkx esækvksa ds l;kx ls vusd :iksa esa ifjHkkf"kr gksrk jgrk gS og vkor] ikuh ds cqycqys dh rjg] rjax dh rjg] Hkoj dh Hkkfr] Qu dh Hkkfr tysa esa lcds ifrf"Br jgus dh rjg lHkh jlksa esa rnor i/kku :i ls fojktseku jgrk gS A oLrqr% Hkoj ] rjax] cqycqys vkfn leLr ty gh gksrs gS mlh idkj d:.k Hkh lHkh jlksa esa leLr jgrk gS A

iLrkouk &

आचार्य भवभूति ने करूण रस की एकमात्र प्रतिश्ठा उत्तररामचरितम् नामक नाटक में की है । इसके पूर्व आदि कवि के कर्म वाल्मीकीय रामायण में करूण रस अंग. ीरस के रूप में प्रतिश्ठित था । किन्तु इन्होंने तो मुक्त कण्ठ से क्रूरूण को ही एकमात्र रस स्वीकार करते हुये घोशणा की –

,dks jl% d#.k ,o fufeÙkHksnkr~
fHkUu% iFkd~ iFkfxokJ;rs foorkZu~ A
vkor cqncqnrjaxe;kfUodkjkUk~
uEcq ;Fkk lfyyeso rq rRlexzEk1 AA

अर्थात् निमित्त भेद से पृथकता का बोध न होने से अलग – अलग आश्रय से अन्य रसों का बोध होता है किन्तु सभी रसों का निमित्त करूण है उसी प्रकार जैसे वस्तुतः समस्त जलराषि में बुलबुले तरंगादि रहते है ।

d:.k dh LFkkiuk

भवभूति की इस प्रस्थापना के मूल में जाकर विचार करें तो कोई अत्युक्ति कर साहित्य जगत को चौंका देने की उनकी मंषा नहीं है, अपितु श्रीराम के उत्तर चरित से निकली हुई एक संवेदना ही करुणा है। साहित्य जगत् में परम्परा से रसराज की पदवी श्रृंगार को प्राप्त है। इस परम्परा में बिना किसी प्रष्नचिन्ह के या बिना इसके खण्डन के भवभूति ने करुणा को उससे बढ़कर स्थापित कर दिया। उन्होंने एक नई सोच दी। रस तो कवियों की सोचों के ही औरस पुत्र हैं। तरह–तरह की मानवीय चिन्ता , संवेदना , साहित्य संसार में रस–राग के आकार–प्रकार में छवि धारणकर प्रकट होते रहते हैं। जलधर की भाँति भिगोने के लिए, तर करने के लिए, मानव होने के लिए। क्रौंचवध से उपजी पीड़ा ने आदि कवि को तरह–तरह के रस से युक्त आदि महाकाव्य रामायण रचने की प्रेरणा दी। मानों वही करुणा विविध रसों की भंगिमा में काव्यरूप बन गई। इसी परम्परा को अग्रसर करते हुए घनीभूत पीड़ा को भवभूति ने स्मृति से उतारकर 'उत्तर रामच. रितम्' नाटक में करुण रस वाली नई अवधारणा की स्थापना की है। जिस प्रकार घनीभूत वाश्प कभी वर्शा में तो कभी बादल के फट पड़ने की, और उसमें पर्वतों के धसक जाने की स्थिति निर्मित होती है, वैसे ही 'उत्तररामचरित' की करुणा – सीता–राम की पीड़ा ने पत्थर तक को अपने संग रोने के लिए फट पड़ने के लिए विवष–सा कर दिया है जो कार्य षेक्सपियर की त्रासदी भी नहीं कर सकी। सीता के वियोग से विकल जनस्थान के रोते हुए पत्थर और फटते हुए वज्रह्रदय की गहराई को पष्चिमी त्रासदी कदाचित स्पर्ष भी नहीं कर पाई ।

tuLFkku 'kU; fodydj.kjk;l pfjr
jfixkok jkfnR;fi nyfr otL; ân;Ek 2 AA

करुणा यद्यपि दुखात्मक प्रकृति वाली होती है, तथापि अन्य मौलिक प्रवृत्तियों की अपेक्षा यह त्वरित प्रतिक्रिया वाली है। यह अन्य प्रवृत्तियों को प्रतिक्रिया के लिए करूणा उकसाती है , कभी उत्साह को तो कभी क्रोध को, कभी घृणा को तो कभी षान्ति–प्रेम को। करुणा की इसी व्यापक और सुखदुखात्मक प्रकृति को पहचानकर भवभूति ने अपनी प्रतिभा का प्रमाण दिया है। इसी से प्रभावित होकर उन्होंने आँचल में दूध और आँखों में आँसू समेटे स्त्री समाज के प्रति अपनी सहानुभूति विषेश रूप से अभिव्यक्त की है। सीता के विरह में राम को बार–बार रुलाया है, मूर्च्छित होने दिया है। करुण रस की टोकरी में तपस्या है – ("पुटपाक प्रतीकाषो रामस्य करुणो रसः") राम को जन अदालत के कठघरे में खड़ा किया है , अपराध स्वीकार करने के लिए। न्यायाधीष के द्वारा अपराधी करार दिये जाने पर अपराध बोध में वह प्रायष्चित का भाव नहीं रहता जो व्यक्ति के द्वारा स्वयं सबके सामने बिना किसी वाह्य दबाव के स्वीकारे जाने पर। राम ने स्वीकारा है कि एक तो रावण वध के बाद अग्नि परीक्षा लेना अन्याय था और उस पर से यह लोकापवाद के भय से निर्वासन दण्ड दिया जाना तो 'अपूर्व चाण्डाल कर्म' है। प्रेम से पाली गई चिडिया को छल के साथ बहेलिये के हाथ सौंपना हो गया है –

Þvioidepk.Mkyef; eqX/ks foeqP;pekEkA
fJrkfl pUnuHkkUR;k nqfoZikda fo"kæqeEkAAß

अपने को 'अपूर्वकर्मचाण्डाल' कहना राम का साहस हो सकता हैं, या भवभूति की लेखनी ही ऐसा कर सकती थी। उनकी कवि प्रतिभा स्त्री विशयक अनेक भ्रान्त धारणाओं और रुढियों पर प्रहार करती है। मालतीमाधव नाटक में परम्परा से हटकर मालती और माधव के प्रेम परिणय के बाधक समाज को एक प्रकार से कापालि करार कर दिया गया है। कापालिक अघोरघंट यदि मालती को बलि देने के लिए उद्यत है तो पिता भी मंत्री होकर भी राजा के बूढ़े नर्मसचिव नंदन से उसका ब्याह कर देने की स्वीकृति देकर कापालिक की तरह बलि देने का ही मानो उपक्रम करते हैं & Þfuo|;<s p fu»d#.kr;k rkrL; dkikfydRoEkAß çkQslj jk/kkoYyHk f=ikBh का कथन है कि "सामंतीय समाज में स्त्री को एक उपभोग की वस्तु बना दिये जाने के विरुद्ध प्रतिक्रिया कालिदास और भवभूति दोनों ने बड़े प्रखर रूप में दी है।... कवि के मन में स्त्री की छवि और समाज में उसकी चिन्त्य स्थिति दोनों को एक साथ विडंबना की षैली में भवभूति ने राम के मुख से व्यक्त कराया है।

दूसरी परम्परा के नाटककार भवभूति पृश्ठ 9)

रचनाकार चाहे जिस वर्ग या संस्कार को लेकर सरस्वती के मंदिर में आया हुआ हो, वह तो मानवता, समता, समस्त के प्रति प्रेम और सद्भाव संजोये रहता है, बिल्कुल संतों की तरह। विषेशकर , षोशित, पीडित के प्रति निवेदन लेकर आता है। उसके निवेदन में आक्रोष–आकांक्षा,रीझ–खीझ होते हैं समश्टि के कल्याण के लिए भवभूति का स्वर जरा ज्यादा ही ऊँचा –तीखा है कबीर की भाँति। स्त्री के लिए राज–समाज को प्रेरित करते हैं। वे व्यक्ति के सम्मान की योग्यता गुण को मानते हैं – जाति, लिंग, वय आदि को नही AÞx|.kk% iqtkLFkku xq.k»kq u p fyax u p o;%Aß HkoHkwfr mÙkj pfjr 251

विवाहिता स्त्री के परित्याग व प्रसंग षाकुन्तलम् नाटक में भी है और उत्तर रामच. रित में भी। दोनों नाटकों में दोनों नाटककारों ने राज–समाज की ओछी मनोवृत्तियों पर टिप्पणी की है, किंतु कालिदास की टिप्पणी उतनी तीखी नहीं है जितनी भवभ. ूति की है। निर्वासन के अनौचित्य पर जनक कहते हैं कि यह तो सीता और मेरा भी अपमान है, तो कुरूपत्नी अरुंधती अग्निपरीक्षा को ही अनुचित ठहराती है। वे सीता को वंदनीय चरित्र मानकर उसे अग्नि से ज्यादा पवित्र मानती हैं।

मालती–माधव के प्रेम की मान्यता, धर्म की विकृति के प्रतीक कापालिक अघोरघंट का वध, षम्बूकवध ह्रदयहीन रूढ़ व्यवस्था के प्रति जनक माता कौसल्या आदि के आक्रोष की अभिव्यंजना भवभूति को क्रांतिकारी कवि प्रमाणित करने के पर्याप्त प्रमाण हैं। उन्होंने रामायणी कथा में बहुत कुछ परिवर्तन करते हुए साहस का परिचय दिया है यह साहस चमत्कार या नवता के व्यामोह में पड़कर नहीं किया गया है, अपितु उनके मन के अंदर उमड़–घुमड़ रही वह विचार वाश्प है जो मानवीय संवेदना के विविध रूपो में नाटकीयता के अनुरूप बरस पड़ती है, फूट पड़ती है दृ ज्वालामुखी की तरह। अन्तर्दाह से दग्ध होता राम मन भवभूति का पीड़ा तापित मन लगता है, जो ष्लोक में परिणत हो गया है, जो अपने राम को न जीने देता है न मरने –

Volume : 4 | Issue : 10 | October 2014 | ISSN - 2249-555X

nyfr ân;ł xk<kş}xł f}/kk rş u fHk|rł
ogfrł fody% dk;k eksg u eŋ¥pfr pşruke AA
Toy;fr ruşeUrnkZg% djkfr u HkLelkRkA
çgjfr fof/keZeZPNsnh u —Urfr thforEk4 AA

— उत्तर रामचरित

अर्थात सीता विरह में राम कहते हैं कि गाढ़ोद्वेग ह्ृदय को दल–सा रहा है, तथापि वह दो भागों में फट नहीं रहा है। विकल काया बार–बार मूर्च्छित होकर भी चेतना छोड़ नहीं रही है, अर्थात मूर्च्छा की अवस्था में भी पीड़ा का अनुभव चैन नहीं लेने देता। अन्तर्दाह षरीर को जलाकर भस्म नहीं बना रहा है, ताकि दाह से मुक्ति मिले। दैव ने मेरे मर्म पर प्रहार किया है, परन्तु जीवन को समाप्त नहीं किया है, ताकि वह भोगता रहे। त्रासदी के नाटककार षेक्सपियर से तुलना करते हुए डॉ. रामविलास षर्मा ने कहा है "प्रसार–यथार्थ की विविधता मनोवैज्ञानिक सूझ–बूझ, चरित्र निर्माण की वास्तविकता में यद्यपि षेक्सपियर आगे हैं, तथा गहराई , षोक. ानुभूति की तीव्रता, करुण रस ही नहीं, वात्सल्य आदि सुकुमार भावों की पराकाश्ठा में भवभूति आगे हैं। 5"

उदाहरण के लिए यथार्थ से साक्षात्कार प्रसाद भी करते हैं और निराला भी, परन्तु प्रसाद या प्रेमचन्द उस यथार्थ को प्रायः आदर्षोन्मुख बना देते हैं,जबकि निराला करुणोन्मुख बनाते हैं । वैसे ही कालिदास और भवभूति की काव्यानुभूति है। कालिदास दण्डकारण्य की सीताहरण घटना की स्मृति को रघुवंष में (14/25) सुखात्मक अनुभूति बना देते हैं तो भवभूति उत्तर रामचरित में चित्रदर्षन से उपजी स्मृति को दुखद। यह स्मृति लक्ष्मण को भी कचोटती है, तो राम को भी मर्माहत करती है। यही "ते हि नो दिवसा गताः" – के रूप में राम मुख से प्रकट होती है। राम उसे भुला नहीं पाते। यह यथार्थ एक मुहावरा–सा बनकर संस्कृत में प्रच. लित हो गया है।

भवभूति के तीनों नाटक विदूशकविहीन हैं। हास्यव्यंग्य पात्रहीन इन नाटकों में ध ार्मिक सामाजिक विडम्बना और विसंगति पर प्रहार या व्यंग्य संस्कृत का रूढ़ पात्र विदूशक राजा या नायक का मुँहलगा बनकर करता रहा है, हास्य के बहाने से । किन्तु भवभूति के नाटकों में यह कार्य बच्चों और छात्रों से कराया गया है। लव और चन्द्रकेतु के बीच अष्वमेघ के घोड़े को रोक लेने के कारण जो संवाद हैं, वह सामंती व्यवस्था पर कड़ा प्रहार है। वासंती का सीधा–सीधा राग विशयक उपालम्भ भी इसके उदाहरण हैं। संभवतः भवभूति की करुणा ने गंभीरता के बीच ममेंविदूशकीय ओछेपन को टालने के लिए ऐसा किया हो।

भाशा और भाव के स्तर पर भवभूति नें एक ही ष्लोक में अनेक विरोधी अनुरोध ी भावों की व्यंजना जगह–जगह छूती है । नाटकीय द्वन्द्व विधान के लिए कहीं रामायण की कथा में, कहीं भाशा में, रंगमंच की षैली में परिवर्तन किया गया है। डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी का मन्तव्य है कि "सामाजिक षक्तियों की द्वन्द्वात्मकता भवभूति के तीनों नाटकों की अन्तर्वस्तु कही जा सकती है।... महावीर चरित में राम कथा के क्षेत्रों में एक प्रवर्तक नाटक है। भवभूति ने साहस करके राम कथा के रंगमंचीय रूप का जो मानदण्ड बना दिया, उसका प्रतिरूप लेकर राजषेखर (बालरामायण), मुरारि (अनर्घराघव), जयदेव (प्रसन्नराघव) आदि ने रामायण की विशयवस्तु पर नाटक लिख दिये6।"

fu"d"k &

'उत्तररामचरितम' नाटक भवभूति के विलक्षण प्रतिभा वैभव का विलक्षण प्रसाद है। उनके वेद, उपनिषद, साँख्य आदि दर्शन, ज्ञान, लोक–लगाव और नाटक धर्म से सीधे जुड़ावों का मधु मिश्रण है। उनकी प्रतिभा प्रयोगधर्मी है। वह दर्शन–वर्णन, परम्परा और प्रयोग को नाटकीय अनुरोध की शर्त पर दूध–पानी की तरह घुलाती हैं। परम्परा के आगे नई रेखा खींचती है। पूर्व रंग, नान्दी, रस, भाषा, मंच विध ाान, कथा–विन्यास, प्रकृति चित्रण प्रेम अभिव्यंजना सभी स्तर पर कवि ने लीक से हटकर नई लीक बनाई है। वाल्मीकि की करुणा को परिपूर्णता दी है। राम भगवान से उतारकर महावीर रूप में अवतरित कराया है। प्रकृति के कोमल–कठोर, सुखद और त्रासद रूपों का एकत्र दर्शन कराकर जीवन के तिक्त, अम्ल–मधुर भावों का रस चरवाया है। लोकजीवन की सच्ची अनुभूति से नाटक को केवल मनोरंजन का माध्यम न बनाकर जागरण का हेतु भी बनाया है। संवेदनाशून्य शास्त्र और नपुंसक परिणामरहित करुणा 'आह–ओह' को नकारा है। निश्चय ही कालिदास के बाद भवभूति संस्कृत की विलक्षण भूति हैं।

REFERENCE lUnHk & | 1- mÙkjjkepfjr & 3-47 | 2- mRrjjkepfjre & 1-28 | 3- mRrjkjkepfjre & 1-46 | 4- mRrjkepfjre | 5- ijEijk dk eY;kdu i"B 43 | 6- mÙkj jkepfjr 6@12 |